रात्रि क्लास 15/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वर्सा याद है?

पवित्र बनने में समय लगता है। मुख्य बात है ही पवित्रता की। सारा मदार पवित्रता पर है। वह पवित्र दुनिया यह अपवित्र दुनिया। वह पवित्र गृहस्थ आश्रम है यह है अपवित्र। सारा मदार इस पर है। काम शत्रु पर जीत पाने में मेहनत लगती है। क्रोध पर जीत पाने में भी मेहनत लगती है। बाबा ने रास्ता तो सभी बहुत अच्छा बताया है। नीचे गिरे हैं फिर ऊपर चढ़ना है। अभी कयामत का समय है। पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। जन्म–जन्मान्तर के पाप कैसे भस्म हो। इसके लिए ही याद की यात्रा की मेहनत है। मन्मनाभव–मध्याजीभव। मुझे याद करो। और कोई तकलीफ नहीं। याद कर पवित्र बनो और यह (ल0ना0) बनो। यह ल0ना0 भी पवित्र बन विश्व के मालिक बने हैं। उनके आगे पतित ही थे। मुख्य बात है ही पावन बनने की। सन्यासी पावन बनते हैं; परन्तु उनको जन्म–जन्मान्तर के लिए लक्ष्य नहीं है। उनका वैराग्य है हद का। तुम्हारा है बेहद का। सन्यासी भी तुम हो वह भी है। भाई–बहन बनने बिगर वरसा पा न सके। प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड बच्चे हैं ना। तो बहन–भाई हो गये। हाँ, बहन–भाई बनते ही हैं पवित्रता के लिए। फिर उनकी क्रिमनल आई नहीं रहती। प्रजापिता ब्रह्मा गाया जाता है तो जरूर बहुत बच्चे एडाप्टेड होते होंगे। तब ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहलाती हैं। तुमको समझ है ब्रह्मा क्यों एडाप्ट करते हैं। ब्रह्मा के पास तो मिलकियत है नहीं। लौकिक और पारलौकिक बाप से मिलकियत मिलती है। बाकी इस अलौकिक बाप से मिलकियत नहीं मिलती है। इन द्वारा बेहद के बाप से मिलती है। यह तो रचना है ना। यह करके बड़ा भाई ठहरा। सभी पढ़ते हैं। यह भी पढ़ता है। यह भी एडाप्ट किया हुआ है तुम भी एडाप्ट किये हुए हो। बाप कहते हैं इनको याद करने से क्या फायदा। जिससे मिलना है उनको याद करना है। ब्रह्मा को याद करने से कोई पावन नहीं बन सकता। यह सभी बातें समझने की हैं। बाप कहते हैं मैं कोई वेद–शास्त्र उपनिषद नहीं सुनाता हूँ। वही गीता सुनाता हूँ। तुम जो पढ़ते आये हो उसमें भूले हैं। तुम बच्चों की विजय ही इसमें होनी है। जब सिद्ध कर बताओ भगवान सर्वव्यापी नहीं। वह बाप हम बच्चे हैं। तो गीता का भगवान भी सिद्ध हो जावेगा। रचना से रचना को वरसा मिल न सके। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर रचना है। ऊपर में है शिव परमात्मायनमः। ऊँच ते ऊँच हुआ ना। वह पारलौकिक बाप यह अलौकिक। इन द्वारा सुनाते हैं। इसलिए बाप याद जरूर आते हैं। यह दुम्ब है। बाबा ब्रह्मा द्वारा हमको पढ़ाते हैं। बाप को शरीर चाहिए ना। तब इन द्वारा पढ़ाते हैं। यूँ तो हम सब उनके बच्चे हैं। तो उनसे ही वरसा मिलना है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है। वह थी पवित्र वायसलेस दुनिया। अभी है विषस दुनिया। विलायत में भी कोई जाये। यह तो वह मानते हैं प्राचीन योग है जिससे पैराडाइज़ स्थापन होता है। तुम भी समझते हो याद से पवित्र बन नई दुनिया के मालिक बनते हैं। नई दुनिया की महिमा तो बहुत है। देखा जाता है तकदीर में न है तो कितने भी कोई मेहनत करे, माथा मारे कुछ हो नहीं सकता। बम्बई में कालका देवी के प्रदर्शनी में भी समझावें कि कृष्ण तो कुमार ही नहीं रहा होगा शादी की होगी। यह किसको भी पता नहीं है राधे–कृष्ण ही फिर स्वयंवर बाद ल0ना0 बनते हैं। दिखलाते भी हैं जोड़ी है; परन्तु उनकी क्या लगती है वह समझते नहीं। राधे–कृष्ण को प्रिन्स कहते हैं। कृष्ण को महाराजा नहीं कहते। भगवान कहते हैं। नारायण को फिर महाराजा कहते हैं। भगवान नहीं कहते। मुँझ है ना। भक्तिमार्ग में इतना शुट(सूत) मुँझा हुआ है जो किसकी ताकत नहीं जो ज्ञान का शुट(सूत) समझा सके। बाप कहते हैं यह शास्त्रों का ज्ञान नहीं। ज्ञान से सद्गति होती है। शास्त्रों से सद्गति नहीं होती। सद्गति के लिए एक ही रास्ता है। जो एक बाप के पास ही है। अनेक रास्ता नहीं है। शान्ति और सुख का दोनों वरसा बाप से मिलती है। सतयुग में सुख भी है, शान्ति भी है। वहाँ यह पता नहीं पड़ेगा। सतयुग के बाद त्रेता आयेगा। वह पता नहीं होता। वृद्धि होती है यह समझते हैं। बाकी और कोई ख्यालात ही नहीं है। कितनी अच्छी कमाई है। और पढ़ाई से यह कमाई है। पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है। मुख्य है

पढ़ाई। मनुष्य को बैरीस्टर, मनुष्य को फलाना बनाना लक्षण चाहिए। तब बाप कहते हैं पवित्र बनो। यहाँ से जब आत्मा जाती है तो कर्मबन्धन की बात नहीं रहती। कहाँ का कहाँ आत्मा चली जाती है। उस ही कुल में नहीं आती है। मूल बात है पावन बनने की। बाप कहते हैं भाई–2 बनो। देह सहित देह के सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझो। कितने ढेर आत्माएँ हैं। सभी जावेंगे अपने घर। 500 करोड़ आत्माओं का झुण्ड है। मकड़ों का झुण्ड भी जाता है ना। वह समुद्र को भी पार कर जाती हैं। कहाँ–2 से आती है। उनको समझ है यहाँ पानी है। नीचे उतरने से ही पानी में चले जावेंगे। जहाँ मैदान देखते हैं तो बैठ जाते हैं। हरियाली देखते हैं तो बैठ जाते हैं। उन्हों की भी फ्लॉस्पी होगी। समुद्र पार कर आते हैं या सुख से ही आते हैं। कहते हैं टर्की इरान से आते हैं। ऐसा नहीं कहते अमेरिका वा इंगलैंड से आते हैं। तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है। जैसे कल की बात है। 5000 वर्ष पहले इनका राज्य था। तुम बच्चे अभी धणी के बने हो। बाप की याद बहुत जरूरी है। बाप कहते हैं और सभी भूल जाओ। ल0ना0 बनने लिए शिवबाबा को याद करना है पावन बनना है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।